पुस्तकालयों के निर्माता

एंड्रू कार्नेगी

पुस्तकालयों के निर्माता

अध्याय एक

पुस्तकालय दिवस

क्या आपके नगर में कोई पुस्तकालय है? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि पुस्तकालय के बिना आपका नगर कैसा होगा? आज से कोई सौ वर्ष पहले देश के अधिकतर नगरों में पुस्तकालय नहीं थे. उस समय पुस्तकालय से किताबें ले कर पढ़ने की कोई व्यवस्था नहीं थी. सिर्फ धनी लोग ही किताबें पढ़ते थे क्योंकि वही किताबें खरीदने का सामर्थ्य रखते थे.

एंड्रू कार्नेगी नाम के व्यक्ति मानते थे कि लोगों को, जब वह चाहें तब, पढ़ने के लिए किताबें मिलनी चाहियें. उन्नीसवीं शताब्दी के पचासवें दशक में जब एंड्रू एक गरीब लड़के थे और पेनसिलवेनिया राज्य के पिट्सबर्ग नगर में बड़े हो रहे थे तब वहाँ कोई पुस्तकालय न था. लेकिन पिट्सबर्ग में एक व्यक्ति था जो अपनी पुस्तकालय की किताबें नौकरी करने वाले लड़कों को पढ़ने के लिये दिया करता था.
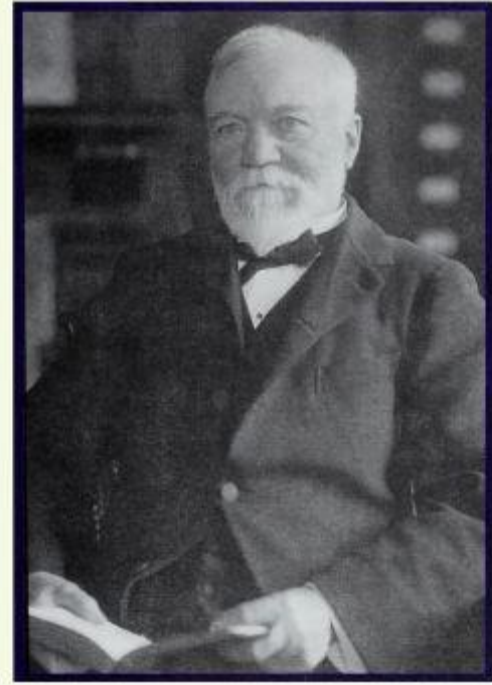
किताब लेने के लिये जब एंड्रू उस पुस्तकालय में जाया करते थे तब उन्हें अद्भुत ख़ुशी मिलती थी. जीवन भर वह उस आश्चर्यजनक ख़ुशी को भुला न पाए थे. वह चाहते थे कि हर लड़का वैसी ही ख़ुशी का अनुभव करे.

बड़े होने के पश्चात एंड्रू कार्नेगी अमरीका के सबसे धनी लोगों में से एक बने. लेकिन वह यह बात कभी न भुला पाए कि निर्धन होना कितना बड़ा अभिशाप था और किताबों की चाहत क्या थी.

जितना धन उन्होंने अपने जीवन में अर्जित किया था उतना ही धन उन्होंने जीवन के अंतिम वर्षों में दान कर दिया था. इस धन से उन्होंने संसार के कई नगरों में पुस्तकालय बनाये. शायद आपने भी यह किताब एंड्रू कार्नेगी पुस्तकालय से ली हो.

अगर आपने यह किताब किसी सार्वजनिक पुस्तकालय से ली थी, तो आपने कोई पैसे न दिए होंगे. लोग पुस्तकालय के लिये वैसे ही पैसे देते है, जैसे वह स्कूलों और सड़कों के लिये देते हैं, कर देकर. लेकिन जब आप अपने पड़ोस की पुस्तकालय जाते हैं, तो आपको एक कौड़ी भी नहीं देनी पड़ती (किताब लौटाने में देरी के लिए जुरमाना शायद देना पड़ सकता है). अमरीका के पुस्तकालयों की सबसे बड़ी खूबी है कि कोई भी व्यक्ति पुस्तकालय जाकर किताब ले सकता है.

पुस्तकालय से किताब लेना

क्या यह किताब आपने किसी सार्वजनिक पुस्तकालय से ली है? अगर ऐसा है तो आप उन लाखों अमरीकियों में से एक हैं जो हर वर्ष पुस्तकालयों का उपयोग करते हैं. कोई भी (विद्यार्थी, माता-पिता, अध्यापक, छोटे बच्चे) पुस्तकालय से पढ़ने के लिये किताब ले सकता है. यह बहुत सरल है! जैसे ही आप अपना नाम लिखना सीख जाते हैं, आप अपना पुस्तकालय कार्ड बनवा सकते हैं. इस कार्ड की सहायता से आप जब चाहें पुस्तकालय से किताब ले सकते हैं. बस पुस्तकालय जाकर अपनी मनपसन्द किताब चुन लें, लाइब्रेरियन को अपना कार्ड दिखायें, और पढ़ने के लिए किताब घर ले जायें.
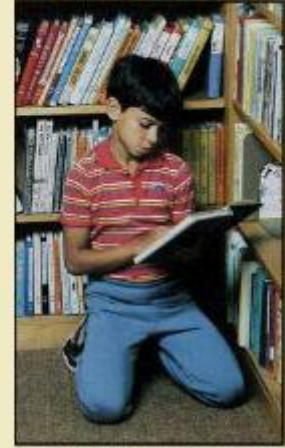
डनफ़र्मलाइन का एक लड़का

एंड्रू कार्नेगी का जन्म स्कॉटलैंड के एक छोटे से नगर डनफ़र्मलाइन में 25 नवम्बर 1835 को हुआ था. एंड्रू के पिता, विलियम कार्नेगी, लिनन का कपड़ा बुनते थे. डनफ़र्मलाइन के अन्य बुनकरों की तरह वह भी हाथ से चलने वाले करघे पर बुनाई करते थे. डनफ़र्मलाइन के सभी बुनकर बहुत सुंदर मेज़पोश बनाते थे. यह मेज़पोश सारी दुनिया में प्रसिद्ध थे.

लेकिन 1835 में जीविका कमाना सरल नहीं था. औद्योगिक क्रान्ति अपने चरम पर थी. कारखानों में मशीनों की सहायता से कपड़ा बड़ी मात्रा में और सस्ता बुना जा सकता था.

डनफ़र्मलाइन, स्कॉटलैंड में एंड्रू कार्नेगी के जन्मस्थान को एक मयूज़ियम की तरह सुरक्षित रखा गया है.

औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक क्रांति का आरंभ अठारवीं शताव्दी में इंग्लैंड में हुआ था. औद्योगिक क्रांति के पहले अधिकतर लोग या तो खेती पर निर्भर थे या फिर छोटे नगरों में रहते थे. विलियम कार्नेगी जैसे कुशल कारीगर अपने घरों में हाथ से चलने वाली मशीनों से काम करते थे. लेकिन औद्योगिक क्रांति के आने के बाद भाप और दूसरे ऊर्जा स्रोतों से चलने वाली मशीनों का उपयोग बढ़ने लगा. बड़े-बड़े नगरों में आकर लोग उन कारखानों में काम करने लगे जहां ऐसी मशीनें लगी थीं. हथ-करघों पर काम करने वाले श्रमिक बेरोजगार हो गये क्योंकि फैक्ट्री में बनाई गयी वस्तुएं सस्ती थीं.

औद्योगिक क्रांति के समय कारखानों में वस्तुएं सस्ती और अधिक मात्रा में बनती थीं.

सारे स्कॉटलैंड में बुनकरों को डर था की वह अपना रोजगार खो बैठेंगे.

सन 1848 के आते-आते एंड्रू कार्नेगी के पिता को लगने लगा था कि डनफ़र्मलाइन में अपने परिवार की देखभाल करना उनके लिये कठिन होता जा रहा था. नगर के किनारे बना नया कपास का कारखाना, उनके हथ-करघे के मुकाबले अधिक और सस्ता कपड़ा बना रहा था. बहुत ही खेद के साथ कार्नेगी परिवार ने स्कॉटलैंड छोड़ने का निर्णय लिया. उन्हें लग रहा था की अटलांटिक महासागर के पार अवसरों की भूमि, अमरीका, में वह एक बेहतर जीवन जी सकते थे.

नए देश में साहसिक कार्य

एंड्रू कार्नेगी और उनका परिवार अमरीका आकर पिट्सबर्ग, पेनसिलवेनिया में बस गया. एंड्रू की दो मौसियाँ पहले से ही पिट्सबर्ग में रह रही थीं. स्कॉटलैंड से आये कई लोग वहाँ रहते थे. इस कारण कार्नेगी परिवार को वहाँ अपने घर जैसा ही महसूस हो रहा था.

पिट्सबर्ग, पेनसिलवेनिया 1850 में

पिट्सबर्ग, पेनसिलवेनिया

पिट्सबर्ग नगर पेनसिलवेनिया के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है. वहां अल्लेघ्नी और मोनोंगहेला नदियाँ मिल कर ऑहियो नदी का निर्माण करती हैं. आज, पिट्सबर्ग संसार का स्टील उत्पादन करने वाल सबसे बड़ा केंद्र है. यहाँ बीस लाख से अधिक लोग रहते हैं.

पिट्सबर्ग

Pittsburgh

विलियम कार्नेगी ने पिट्सबर्ग में अपना हाथ-करघा लगाने में कोई समय नष्ट न किया. लेकिन यहाँ भी उन्हें जल्दी ही अहसास हो गया कि कारख़ानों में बनी चीज़ें हाथ से बनाई गयी चीजों से सस्ती थीं. अमरीका में आजीविका कमाना उतना ही कठिन था जितना की स्कॉटलैंड में था. विलियम के बनाये मेज़पोशों की बिक्री धीरे-धीरे घटती गयी जिस कारण वह निराश हो गये.

पेनसिलवेनिया में बसने के बाद विलियम कार्नेगी को समझ आया कि वहां भी फैक्ट्री में बनी वस्तुएं हाथ की बनी वस्तुओं से ज़्यादा लोकप्रिय थीं.

एंड्रू कार्नेगी बारह वर्ष के थे जब उनका परिवार पिट्सबर्ग में आकर बसा था. उन दिनों बारह वर्ष के लड़के या लड़की को इतना बड़ा समझा जाता था कि उनसे अपेक्षा की जाती थी कि आजीविका कमा कर वह अपने परिवार की सहायता करे. एंड्रू ने शीघ्र ही कपास के एक कारखाने में नौकरी कर ली. काम कठिन था और देर तक करना पड़ता था. उन्हें अधिक पैसे भी न मिलते थे. एक सप्ताह काम करने के बाद उन्हें सिर्फ 1.20 डॉलर मिलते थे. फिर भी, एंड्रू कार्नेगी जीवन में पहली बार पैसे कमा रहे थे. इस कारण वह खुश थे.

औद्योगिक क्रान्ति ने विलियम का जीवन कठिन बना दिया था. लेकिन एंड्रू बहुत उत्साहित थे. उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में अमरीका में तेज़ी से उन्नति हो रही थी. टेलीग्राफ और रेल जैसे नये आविष्कार एंड्रू जैसे साहसी, बुद्धिमान और मेहनती लड़कों को कई नये-नये अवसर प्रदान कर रहे थे.

एंड्रू को पहला मुख्य अवसर तब मिला जब उन्हें टेलीग्राफ कार्यालय में मैसेंजर का काम मिला. उन्होंने यह काम तुरंत स्वीकार कर लिया. उन्हें लगा कि एक अँधेरी फैक्ट्री में सारा दिन कठोर परिश्रम करने से तो अच्छा होगा कि वह नगर के जाने-माने लोगों को टेलीग्राफ के संदेश पहुंचाये.

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में बारह वर्ष के छोटे बच्चे भी नौकरी कर के परिवारों सहायता करते थे. एंड्रू कार्नेगी की तरह यह लड़का भी टेलीग्राफ कम्पनी के सन्देश पहुँचाया करता था.

टेलीग्राफ क्या है?

टेलीग्राफ का आविष्कार सैमुएल मोर्स ने 1837 में किया था. यह एक ऐसी मशीन है जिसके द्वारा लंबी दूरी तक सन्देश भेजे जा सकते हैं. इसके लिये मोर्स कोड का उपयोग कर, रेडियो या तारों के द्वारा संदेश भेजे जाते हैं.

लोग उन्हें 'युवा एंडी' के नाम से बुलाते थे. वह मेहनती और तीव्रबुद्धि थे. उन्होंने झटपट पिट्सबर्ग के सब रास्तों के नाम याद कर लिये थे. सन्देश पहुंचाने के लिये उन्होंने सबसे तेज़ रास्ते खोज लिए थे.

टेलीग्राफ मशीन द्वारा सन्देश भेजने ओर पाने का तरीका भी उन्होंने स्वयं ही सीख लिया था. शीघ्र ही उन्हें टेलीग्राफ ऑपरेटर बना दिया गया. अब एंड्रू महीने के पचीस डॉलर कमा रहे थे.

टेलीग्राफ कार्यालय में काम करते हुए उन्हें पिट्सबर्ग के प्रसिद्ध व्यवसायियों से मिलने का अवसर मिला. उन में से एक थे थॉमस स्कॉट. वह पेनसिलवेनिया रेलरोड के पश्चिमी डिवीज़न के सुपरिन्टेन्डेन्ट थे.

मोर्स कोड टेलीग्राफ मशीन से भेजे जाते हैं और प्रशिक्षित कर्मचारी ही इन्हें समझ कर शब्दों में बदलते हैं

मिस्टर स्कॉट को एंड्रू का उत्साह, ऊर्जा और उनकी महत्वाकांक्षा अच्छी लगी. वह एंड्रू से इतना प्रभावित हुए कि उन्हें अपना पर्सनल असिस्टेंट बना लिया.

अमरीका में तेज़ी से बढ़ती रेल प्रणाली के कारण पश्चिम की ओर जाना और वहां बसना संभव हो गया था.

एंड्रू कार्नेगी के लिए यह बहुत आश्चर्यजनक अवसर था. उन्होंने देखा कि अमरीका की उन्नति में रेल का एक महत्वपूर्ण योगदान था. उन दिनों यूरोप से बहुत लोग अमरीका आ रहे थे. इन में से कई लोग कारखानों में काम करने हेतु पूर्वी नगरों में बस गये थे. कई लोग अपनी बंद वैगनों में यात्रा कर, पश्चिम में बसने चले गये थे. पश्चिम में बसे हुए लोगों को पूर्व में स्थित कारखानों में बने सामान की आवश्यकता थी. उधर कारखानों को पश्चिम में उपलब्ध कच्चे माल की ज़रूरत थी. कच्चा माल उन पदार्थों को कहते हैं जिन से कारखानों में अलग-अलग वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, जैसे कि लकड़ी, तेल, पत्थर वगैरह. यह सब पदार्थ और वस्तुएं पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व कैसे भेजी जायेंगी? एंड्रू कार्नेगी को विश्वास था की रेलरोड ही इस समस्या का समाधान था.

एंड्रू कार्नेगी ने थॉमस स्कॉट के लिये 1853 में काम करना शुरू किया था. उनकी आयु लगभग सत्रह वर्ष थी. अमरीका आये हुए उन्हें कोई चार साल ही हुए थे और वह महीने के पैंतीस डॉलर कमा रहे थे. सन 1859 में थॉमस स्कॉट पेनसिलवेनिया रेल रोड के वाईस प्रेसिडेंट बन गये. उनके स्थान पर एंड्रू कार्नेगी रेलरोड के पश्चिमी डिवीज़न के सुपरिन्टेन्डेन्ट नियुक्त कर दिए गये. वह सिर्फ चौबीस वर्ष के थे.

राज्यों के बीच युद्ध

सिविल वॉर 1861 में आरम्भ होकर 1865 में समाप्त हुई. दक्षिण (कॉन्फेडरेट) के राज्य दास प्रथा को चालू रखने के लिए लड़ रहे थे. वह अपनी कृषि प्रधान जीवन पद्धति को भी बचाने के लिए जूझ रहे थे. उत्तर (यूनियन) के राज्य दास प्रथा को खत्म करना चाहते थे.
एंड्रू कार्नेगी ने सिविल वॉर में कोई लड़ाई नहीं लड़ी. लेकिन टेलीग्राफ और रेलरोड प्रणालियों में जो कार्य उन्होंने किये, उन कार्यों का यूनियन की विजय में महत्वपूर्ण योगदान था. टेलीग्राफ ने प्रेसिडेंट लिंकन को सैंकड़ों मील दूर तैनात सेना के अधिकारियों के साथ सम्पर्क बनाए रखने में सहायता दी. रेलरोड के कारण सैनिकों और रसद वगैरह को, घोड़ों और वैगनों के मुकाबले, एक जगह से दूसरी जगह तुरंत ले जाना संभव हुआ.

एंड्रू कार्नेगी के लिये यह एक बड़ी पदोन्नति थी. उन्होंने पिट्सबर्ग में एक बड़ा घर ले लिया, जहां वह अपनी माँ और छोटे भाई टॉम के साथ रहते थे. एंड्रू को बस इसी बात का दुःख था कि उनके पिता का निधन हो चुका था और वह उनकी सफलता को देख न पाए थे.
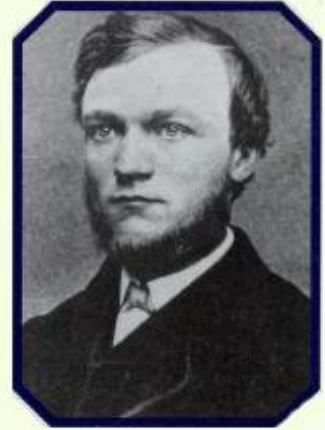
जब 1861 में जब गृह-युद्ध शुरू हुआ तो थॉमस स्कॉट और एंड्रू कार्नेगी वाशिंगटन डीसी. आ गये. वह रेलरोड और टेलीग्राफ की प्रणालियों को व्यवस्थित कर, यूनियन सेना की सहायता करना चाहते थे. एंड्रू के लिये यह एक बड़ी चुनौती थी लेकिन चुनौतियों का सामना करना उन्हें अच्छा लगता था.

एंड्रू कार्नेगी ने 1865 में सिविल वार के समाप्त होने तक पेनसिलवेनिया रेलरोड में काम किया. फिर, सब को चौंकाते हुए, उन्होंने रेलरोड में अपना पद त्याग दिया. अब नये साहसिक कार्य करने का समय था.

भाग्य बनाने का दृढ़ संकल्प

पेनसिलवेनिया रेलरोड में काम करते हुए भी, एंड्रू कार्नेगी अन्य तरीकों से पैसे कमा रहे थे. एंड्रू ने देखा था कि पूरे अमरीका में रेल की पटरियां बड़ी मात्रा में लगाई जा रहीं थीं. शीघ्र ही लोगों के लिये देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाना संभव होने वाला था. एंड्रू समझ रहे थे कि लोग बैठ कर एक लंबी यात्रा नहीं करना चाहेंगे, क्योंकि कुछ यात्राओं को पूरा होने में कई दिन लग सकते थे.

रेल पर लंबी यात्रा करना इतना लोकप्रिय हो गया था कि एंड्रू ने उस कंपनी में धन निवेश किया जो ऐसे रेल के डिब्बे बना रही थी जिन में यात्री सो भी सकते थे.

यूनियन पैसिफिक रेल और सेंट्रल पैसिफिक रेल के कर्मचारी प्रोमोंटोरी समिट, उटाह में दोनों रेलों की पटरियों के जुड़ने का उत्सव मनाते हुए.

ट्रान्सकांटिनेंटल रेलरोड

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में अमरीका तेज़ी से विकसित हो रहा था. रेलरोड यात्रा करने का एक लोकप्रिय साधन बन गया था. प्रेसिडेंट लिंकन को लगा कि पूर्व-पश्चिम रेल मार्ग जो देश के एक छोर को दूसरे छोर से जोड़ देगा एक अच्छा विकल्प था.

लिंकन ने 1862 में रेलरोड एक्ट पर हस्ताक्षर कर दिए. इसके बाद दो कम्पनियाँ ट्रान्सकांटिनेंटल रेलरोड बनाने लगीं. यूनियन पैसिफिक रेलरोड ने 1863 में ओमाहा, नेब्रास्का से पश्चिम की ओर रेल बनानी शुरू की. सेंट्रल पैसिफिक रेलरोड ने सैक्रामेंटो, कैलिफ़ोर्निया से पूर्व की ओर रेल बनानी शुरू की. प्रोमोंटोरी समिट, उटाह, में 10 मई 1869 के दिन दोनों पटरियाँ जोड़ दी गयीं.
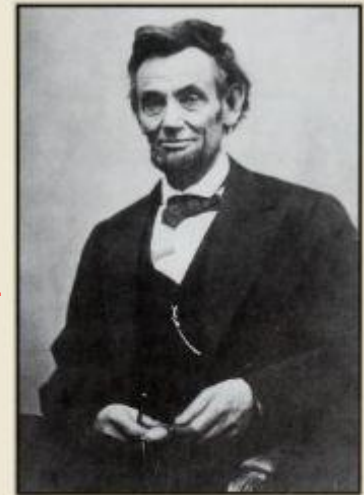
हालाँकि लिंकन का अधिक ध्यान सिविल वॉर की ओर था, लेकिन वह देश की उन्नति के लिये भी चिन्ताशील था.

जब एंड्रू को पता चला कि एक कंपनी ऐसे रेल के डिब्बे बनाने की सोच रही थी जिस में यात्री लेट कर, सोते हुए, यात्रा कर सकते थे तो वह बहुत ही उत्साहित हुए.

एंड्रू ने उस कंपनी में अपना पैसा निवेश करने का निर्णय लिया. जब भी उस कंपनी का बनाया रेल का डिब्बा बिकता तो एंड्रू को लाभ का एक हिस्सा मिलता. उनका अनुमान था कि इस तरह वह बहुत सारा धन अर्जित कर पायेंगे. उनका अनुमान सही निकला.

रेल के डिब्बों की बिक्री से जो धन उन्होंने कमाया उस धन को उन्होंने दूसरे योजनाओं में निवेशित कर दिया. रेलरोड में कार्य करने के कारण वह जानते थे कि लकड़ी के बने रेल के पुल या तो अकसर आग लगने से जल जाते थे या बाढ़ में बह जाते थे. एंड्रू ने सोचा कि लोहे के बने पुल अधिक सुरक्षित होंगे. यही सोचकर उन्होंने 'कीस्टोन ब्रिज कम्पनी' की स्थापना की. इस कम्पनी ने अमरीका में हर ओर लोहे के पुल बनाये. और हर पुल पर एंड्रू ने लाभ कमाया.

एंड्रू कार्नेगी ने तेल के कुओं में भी पैसा निवेश किया. औद्योगिक क्रान्ति के पहले कच्चे तेल का कोई ख़ास उपयोग न होता था. लेकिन एंड्रू ने अनुमान लगाया कि नई फक्ट्रियाँ लगने पर मशीनें चलाने के लिये तेल की आवश्यकता बढ़ जायेगी. वह पेनसिलवेनिया और ऑहियो में तेल के कुँए खरीदने लगे. शीघ्र ही एंड्रू कार्नेगी बहुत धनी हो गये.

कच्चा तेल

अमरीका में कच्चे तेल का उद्योग 1859 में शुरू हुआ जब एडविन ड्रेक ने टाइटसविल्ले, पेनसिलवेनिया में तेल के एक कुँए की खुदाई की. आजकल, अमरीका का अधिकतर कच्चा तेल टेक्सास, अलास्का और कैलिफ़ोर्निया से निकाला जाता है. कच्चा तेल सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है. यह धरती की गहराई में चट्टानों में पाया जाता है. इसे मशीनें, जैसे कि कारें, ट्रक, रेलें, ट्रेक्टर इत्यादि चलाने के लिये उपयोग किया जाता है. घरों और कारखानों को गर्म रखने के लिये और बिजली बनाने के लिये भी इसका इस्तेमाल होता है.

एंड्रू कार्नेगी की सफलता का एक कारण यह था कि वह जोखिम उठाने से डरते नहीं थे. वह उन वस्तुओं और आविष्कारों में पैसा निवेश करते थे जिन के विषय में उनका अनुमान था कि वह बहुत लोकप्रिय हो जायेंगे.

एंड्रू कार्नेगी की सफलता का एक कारण और भी था. वह इस बात पर बहुत बल देते थे कि हर कार्य बिल्कुल सही ढंग से किया जाना चाहिये.

वस्तुओं की गुणवत्ता उनके लिये बहुत महत्वपूर्ण थी. हर योजना पर वह पूरा ध्यान देते थे. जो लोग उनके साथ काम करते थे उनसे भी वह ऐसी ही अपेक्षा रखते थे. उदाहरण के लिये, जब उन्होंने लोहे के पुल बनाने शुरू किये तो उन्होंने महसूस किया कि पुलों के लिये उत्तम गुणवत्ता वाला लोहा पाने के लिए ऐसे लोहे का उत्पादन उन्हें स्वयं ही करना पड़ेगा. इसी कारण एंड्रू लोहे की मिलें खरीदने और स्थापित करने लगे. अब वह पुलों के लिये उचित गुणवत्ता वाला लोहा कभी भी पा सकते थे.

एंड्रू कार्नेगी ने इस बात पर पूरा ध्यान दिया कि लोहे के उत्पादन में कितना पैसा खर्च होता था. कई मिल मालिक वर्ष के अंत तक नहीं जान पाते थे कि उन्हें लाभ हो रहा था या हानि; वर्ष की समाप्ति पर वह सारा खर्च जमा कर ही लाभ-हानि जान पाते थे. लेकिन एंड्रू कार्नेगी इस तरीके से संतुष्ट न थे. उन्होंने ऐसी प्रणाली स्थापित की जिससे न ही पैसा और न ही कोई पदार्थ बर्बाद होता था.

सन 1865 तक एंड्रू इतना धन कमाने लगे थे कि उन्होंने रेलरोड में अपनी नौकरी छोड़ दी. अब वह दूसरों के लिए काम न करना चाहते थे. अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है, “मैं स्वयं अपना भाग्य बनाना चाहता था.

मैं जानता था कि रेलरोड में मुझे चाहे कितना भी वेतन मिले, उस वेतन से मैं ईमानदारी से वह नहीं पा सकता था जो मैं पाना चाहता था. उस समय के बाद मैंने कभी वेतन के लिये काम नहीं किया.”

पेनसिलवेनिया रेलरोड छोड़ने के बाद एंड्रू ने पिट्सबर्ग से न्यू यॉर्क सिटी जाने का निश्चय किया. न्यू यॉर्क सिटी देश की आर्थिक राजधानी थी. देश के कई बड़े बैंक वहीं थे. जिन योजनाओं को अब एंड्रू पूरा करना चाहते थे उनके लिये उन्हें बड़ी धनराशि की आवश्यकता थी. इस कारण उन्हें लगा कि बड़े बैंकों के निकट स्थापित होना अनिवार्य हो गया था. उन्होंने तय किया कि उनका छोटा भाई पिट्सबर्ग की देखरेख करेगा और वह स्वयं न्यू यॉर्क सिटी में रहेंगे.

यद्यपि अब एंड्रू पिट्सबर्ग में नहीं रहते थे पर वहां की मिलों की ओर उनका ध्यान सदा रहता था. एंड्रू ने वहां के कारखानों के लिए सबसे योग्य लोगों को काम पर रखा और सबसे लाभदायक सौदे तय किए. सबसे बढ़िया लोहा बनाने के लिये वह हर समय हर प्रकार की नई जानकारी इकट्ठी करते रहते थे.

लेकिन शीघ्र ही वह समय आ गया जब सबसे बढ़िया लोहा भी देश की आवश्यकताओं को पूरा न कर पा रहा था. लोहे के तुलना में स्टील अधिक मज़बूत था और उससे काम करना भी सरल था.

इसलिये एंड्रू ने तय किया कि वह देश की सबसे बड़ी और सबसे आधुनिक स्टील मिल लगायेंगे. इस का नाम था, 'एडगर थामसन स्टील वर्क्स'. यह मिल पिट्सबर्ग नगर से थोड़ा बाहर स्थित थी.

इसके बाद उन्होंने अन्य स्टील मिलें लगायीं. हर नई मिल पहले की मिलों से अधिक लाभ कमाती थी. सन 1890 के आते-आते एंड्रू कार्नेगी ने पिट्सबर्ग को देश का सबसे अधिक स्टील उत्पादन करने वाला नगर बना दिया था. एक समय पन्द्रह हज़ार से भी अधिक लोग 'कार्नेगी स्टील कंपनी' में काम करते थे.

एंड्रू कार्नेगी की ख्याति इस रूप में फैली थी कि वह एक ईमानदार व्यक्ति थे. वह अपने श्रमिकों को चाहते थे और उनका सम्मान करते थे. जितना वेतन अन्य मिल मालिक देते थे वह भी उतना ही वेतन देते थे.

एडगर थामसन स्टील वर्क्स, पिट्सबर्ग, पेनसिलवेनिया

बड़े बैंकों के निकट स्थापित होने के विचार से एंड्रू कार्नेगी पिट्सबर्ग से न्यू यॉर्क सिटी आ गये.

लेकिन 1892 में कार्नेगी की ‘होमस्टेड स्टील वर्क्स’ के श्रमिकों ने हड़ताल कर दी. अधिक वेतन मिलने तक, श्रमिकों ने काम करने से इंकार कर दिया. इस हड़ताल के कारण एंड्रू की ख्याति को चोट पहुंची.
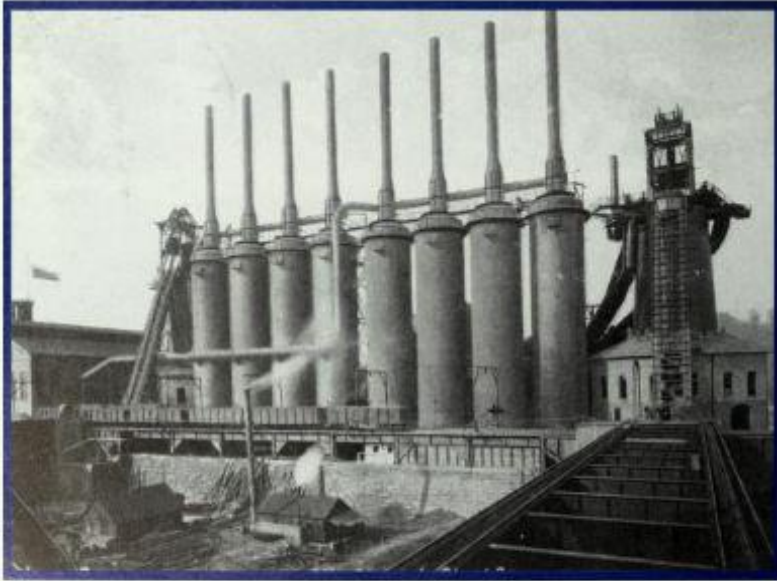
कार्नेगी स्टील कंपनी

होमस्टेड स्टील श्रमिकों की हड़ताल

एंड्रू कार्नेगी स्कॉटलैंड की यात्रा पर थे जब उनकी एक कंपनी के श्रमिक हड़ताल पर चले गये.

होमस्टेड स्टील वर्क्स के मैनेजर ने हड़तालियों से निपटने के लिये बंदूक-धारी पुलिस बुला ली. स्टील मिल में झगड़ा शुरू हो गया. अठारह लोग मारे गये. कई अन्य घायल हो गये. अमरीका के इतिहास में श्रमिकों और मालिकों के बीच हुई लड़ाइयों में से यह सबसे भयानक लड़ाई थी.

अध्याय पाँच
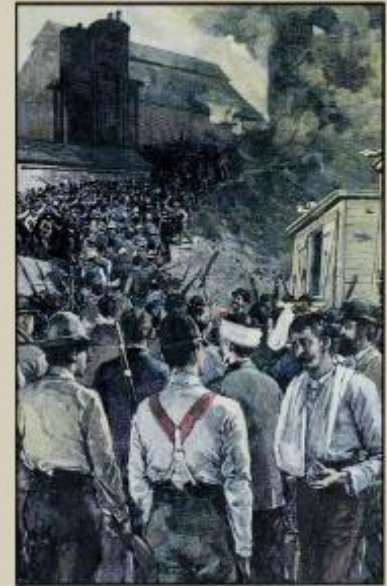
संपत्ति दान में देना

सन 1900 में 'कार्नेगी स्टील कंपनी' वर्ष में चार करोड़ डॉलर से अधिक कमा रही थी. एंड्रू कार्नेगी को एक निर्माता और व्यवसायी होना अच्छा लगता था. लेकिन तभी उन्होंने निर्णय लिया कि जीवन में एक और बदलाव का समय आ गया था. जनवरी 1900 में एंड्रू ने लोहे और स्टील का अपना सारा उद्योग साम्राज्य पच्चीस करोड़ डॉलर में बेच दिया. तब उनकी आयु पैंसठ वर्ष की थी और उनकी सारी धन-संपत्ति तीस करोड़ डॉलर की थी. अपना बाकी जीवन उन्होंने इस संपत्ति को दान देने में बिताया.

एंड्रू कार्नेगी का विश्वास था कि धनी लोगों को अपना सारा धन अपने पर ही खर्च नहीं करना चाहिये.
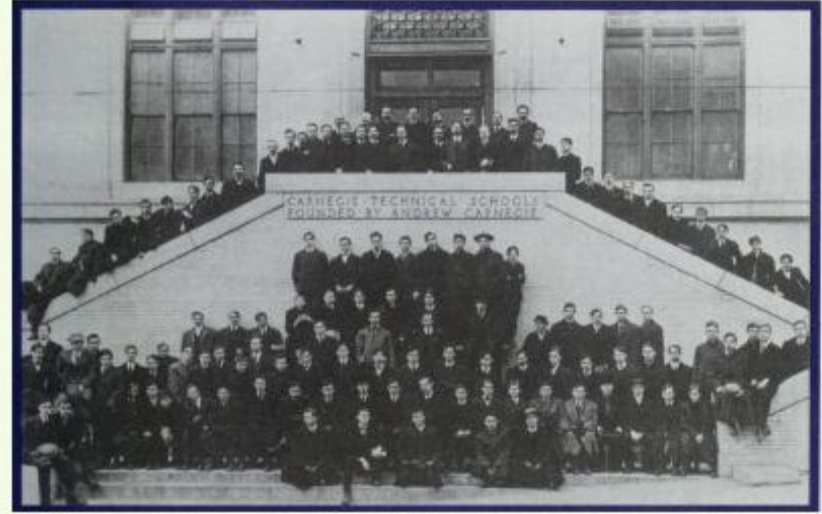
एंड्रू ने दान देकर जो संस्थायें बनायीं थीं उनमें कार्नेगी टेक्निकल स्कूल भी थे जहां विद्यार्थी विज्ञान, इंजीनियरिंग और इंडस्ट्रियल आर्ट्स सीखते थे

उन्हें लगता था की धनी लोगों को अपने समाज की सहायता करनी चाहिये और अच्छे कार्यों के लिये धन देना चाहिए. वह उन धनी लोगों की निंदा करते थे जो बिना कोई दान किये ही संसार से चले जाते थे.

एंड्रू कार्नेगी का मानना था लोगों का पर्याप्त शिक्षित न होना संसार की कई समस्याओं का मूल कारण था. किताबें पढ़-पढ़ कर और शिक्षित लोगों से संवाद कर, उन्होंने अपने को शिक्षित करने का प्रयास जीवन-भर किया था. उन्हें इस बात का दुःख था कि वह कभी कॉलेज न जा पाए थे. इस कारण सर्वप्रथम उन्होंने देश के विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों को बहुत सारा धन दान में दिया.

एंड्रू कार्नेगी ने उन सेवानिवृत्त श्रमिकों को पैसे दिए जो ठीक से अपना जीवनयापन करने में असमर्थ थे. उन्होंने विश्व भर की शांति–संस्थानों की भी आर्थिक सहायता की. उन्होंने एक 'हीरो फंड' बनाया और उन साधारण लोगों को पुरस्कृत किया जिन्होंने आम जीवन में साहसी कार्य किये थे. उन्होंने डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को भयंकर रोगों का उपचार खोजने के लिये धनराशि दी. जब वह स्कॉटलैंड में रहते थे तब उन्हें ऑर्गन संगीत बहुत प्रिय था. उन्होंने अमरीका, कनाडा और ब्रिटेन की 8000 चर्चों में ऑर्गन लगाने के धन दिया. एंड्रू कार्नेगी पिट्सबर्ग को कभी न भुला पाए. उन्होंने अपने नये होमटाउन, पिट्सबर्ग, में दो कॉलेज, एक आर्ट गैलरी, एक मयूज़ियम, एक कॉन्सर्ट भवन और एक सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के लिए बहुत सारा धन दान में दिया

हीरो फंड के मैडल की पिछली तरफ लिखा है कि "मनुष्य का सबसे महान प्रेम यही है कि वह अपने मित्रों के लिये अपने प्राण भी न्योछावर कर दे."

इतनी धनराशि दान में देने के बाद भी एंड्रू के पास बहुत धन बचा हुआ था. इस कारण उन्होंने 'कार्नेगी कारपोरेशन' की स्थापना की. इस कारपोरेशन का उद्देश्य था, एंड्रू के धन को उनकी मृत्यु के बाद भी दान में देना. स्कूलों, पुस्तकालयों और वैज्ञानिक अनुसंधान को सहायता प्रदान करना भी इस संस्था का ध्येय था. आज भी 'कार्नेगी कारपोरेशन' महत्वपूर्ण कार्यों के लिये सहायता देती है.

कैलिफ़ोर्निया यूनिवर्सिटी में कार्नेगी के अनुदान से बनाये गये पुस्तकालय के उद्घाटन पर एंड्रू कार्नेगी उपस्थित जनों को सम्बोधन करते हुए.

एंड्रू कार्नेगी ने करोड़ों डॉलर दान में दे दिए. उन्होंने कई योग्य कार्यों में लोगों और संस्थानों की मदद की. लेकिन उन्हें 'एंड्रू कार्नेगी पुस्तकालयों' के लिए सबसे अधिक याद रखा जायेगा, जो उन्होंने दुनिया के कई नगरों में स्थापित किये.

पुस्तकालय बनाने का विचार उनके मन में तब आया था जब वह पिट्सबर्ग में एक गरीब टेलीग्राफ मैसेंजर थे. कर्नल जेम्स एंडरसन नाम का एक व्यक्ति नौकरी करने वाले छोटे लड़कों को अपनी पुस्तकालय से किताबें लेकर पढ़ने देता था. हर शनिवार के दिन एंड्रू जैसे लड़के कर्नल एंडरसन के घर आते और मनपसंद किताब चुन कर ले जाते. एंड्रू उस उदार व्यक्ति को कभी बुला न पाए जिसने उन्हें शिक्षित होने में सहायता की थी.

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में पुस्तकालय बनाने के लिये एंड्रू ने बहुत सारा धन दिया. जिस भी नगर के लोग पुस्तकालय बनाना चाहते थे एंड्रू वहां पुस्तकालय बनाने का सारा खर्च उठाते थे.

एंड्रू की बस इतनी इच्छा होती थी कि लोग उस पुस्तकालय को किताबों से भर कर रखें और जो लोग किताबें पढ़ना चाहें उन्हें वह किताबें मुफ्त में पढ़ने के लिए दें. जैसे ही इस बात को लोगों को पता लगा तो अमरीका के -और फिर अन्य देशों के - अलग-अलग नगर एंड्रू कार्नेगी पुस्तकालयों की मांग करने लगे. कैलिफ़ोर्निया से कनाडा तक, ऑस्ट्रेलिया से अल्बामा तक, कई नगरों में पुस्तकालय बनने लगीं है.

कुल मिला कर एंड्रू कार्नेगी ने 2811 पुस्तकालयों के लिए धन दिया.

एंड्रू का देहांत 11 अगस्त 1911 को हुआ. सोये-सोये ही शान्तिपूर्वक उन्होंने प्राण त्यागे. लेकिन उनकी उदारशीलता और लोगों को शिक्षित करने की लालसा ने उन्हें अमर बना दिया

एंड्रू कार्नेगी का विश्वास था कि जिस तरह उन्हें किताबें पढ़ने को मिलीं, वैसे ही सब बच्चों को मिलनी चाहियें.

कार्नेगी ने विश्व के कई नगरों में पुस्तकालय बनवाये. उन में से कुछ अब उपयोग में नहीं हैं, लेकिन कई पुस्तकालय अभी भी अपना कार्य कर रहे हैं.
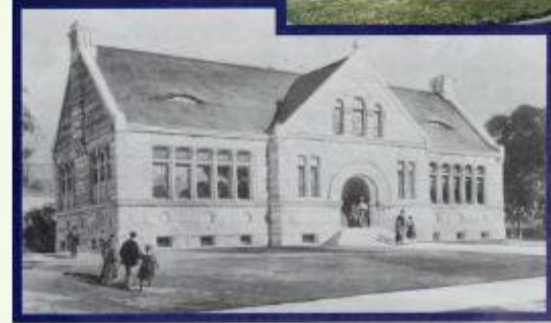
घटनाचक्र

1835	डनफ़र्मलाइन, स्कॉटलैंड में एंड्रू कार्नेगी का जन्म 25 नवम्बर को.
1848	कार्नेगी परिवार पिट्सबर्ग, पेनसिलवेनिया में आ बसा
1850	एंड्रू टेलीग्राफ मैसेंजर का काम करने लगे.
1853	एंड्रू पेनसिलवेनिया रेलरोड में थॉमस स्कॉट का पर्सनल असिस्टेंट बन गये.
1859	एंड्रू पेनसिलवेनिया रेलरोड के पश्चिमी डिवीज़न का सुपरिन्टेन्डेन्ट बने.
1861	सिविल वॉर का आरम्भ. एंड्रू वाशिंगटन आकर यूनियन सेना के लिये रेल और टेलीग्राफ को व्यवस्थित करने लगे.
1865	सिविल वॉर समाप्त.
1865	कीस्टोन ब्रिज कम्पनी की स्थापना.
1865	पेनसिलवेनिया रेलरोड कंपनी से त्यागपत्र दे कर एंड्रू अपने व्यवसाय में जुट गये.
1867	एंड्रू पिट्सबर्ग से न्यू यॉर्क सिटी आ गये.
1873	एंड्रू ने एडगर थामसन स्टील वर्क्स की स्थापना की.
1881	एंड्रू ने कार्नेगी स्टील कंपनी बनाई.
1887	एंड्रू ने 22 अप्रैल को लूइज़ से विवाह किया.
1892	होमस्टेड स्टील श्रमिकों की हड़ताल. ईमानदार व्यक्ति के रूप में उनकी की ख्याति को चोट.
1897	एंड्रू की इकलौती सन्तान, मार्गरेट, का मार्च में जन्म.
1900	एंड्रू ने कार्नेगी स्टील कंपनी को बेच कर अपना बाकी जीवन दान देने में और सामाजिक कार्यों में लगाया.
1911	11 अगस्त की एंड्रू कार्नेगी का देहांत.